कुदरत का कानून

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

कानून सबके साथ न्याय करने के लिए बनाया जाता है। कानून की दृष्टि में सभी समान होते हैं। न कोई छोटा होता है और न कोई बड़ा। देश के कानून में न्याय न्यायाधीश के द्वारा किया जाता है। यह सम्भव है कि न्यायाधीश किसी के साथ पक्षपात कर ले, किन्तु कुदरत के कानून में कोई पक्षपात नहीं होता। वहां पर पुरस्कार और दण्ड की व्यवस्था कर्म के अनुसार होती है। कुदरत के कानून में सभी बराबर हैं।

कुदरत का कानून है कि जो जैसा करेगा वह वैसा भरेगा। जो जैसा बोयेगा वह वैसा काटेगा। जैसी क्रिया वैसी प्रतिक्रिया। जैसा कारण वैसा कार्य। यह सनातन सत्य है। देश के न्यायालय में सम्भव है कि निर्णय गलत हो जाये किन्तु कुदरत के न्यायालय में कभी गलती नहीं होती। वहां का न्याय कभी गलत नहीं होता। कुदरत का न्यायालय न्याय का अंतिम पड़ाव है। इसके विरूद्ध कहीं भी अपिल नहीं हो सकती। कुदरत के न्याय को मौन भाव से स्वीकार करना पड़ता है। जैसा हमने कार्य किया है वैसा परिणाम हमें भोगना पड़ेगा। इसका अपवाद नहीं है। जैसा कर्म बीज पूर्वजन्म में डाला है वैसा कर्म परिणाम वर्तमान जीवन में भोगना पड़ेगा।

कुदरत का कानून अर्थात् ईश्वर का बनाया हुआ नियम। यह एक ऐसा कानून है जहां सबको समान दृष्टि से देखा जाता है। किसी के साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता। प्रकृति में जितने भी पदार्थ हैं सब ईश्वर के कानून से चलते हैं। सूरज का निकलना, हवा का बहना, नदियों का प्रवाहित होना, अग्नि का जलना, ऋतुओं का परिवर्तन होना, नदी, पहाड़, झरनों की रचना होना सब ईश्वर के कानून से होते रहते हैं। प्रकृति का नियम शाश्वत नियम हैं। प्रकृति कभी अपवाद नहीं करती। सबके साथ समान व्यवहार करती है। प्रकृति के साथ जो प्राणी जीवन–यापन करता है, उसे किसी प्रकार का रोग–दोष नहीं हो सकता। वह शतायु होता है। इसी संबंध में आत्म विज्ञान का विवेचन किया गया है। कूदरत का कानून जड़ एवं

चेतन जितने भी पदार्थ हैं, सब पर समान रूप से लागू होता है। दोनों के माध्यम से जीवन चलता है।

चौरासी लाख जीव योनियों का उत्पत्ति स्थान यह सृष्टि ही है। प्रकृति में सभी जीवन–यापन करते हैं। जीव की चार गतियां हैं। अपने–अपने कर्म के अनुसार सभी जीव गतियों को प्राप्त करते है। प्रकृति के नियम के अनुसार ही जो जैसा कर्म करता हैं उसको वैसा फल मिलता है। कुछ लोग पूर्वजन्म में अच्छा कर्म करते हैं तो उन्हें अच्छी योनि प्राप्त होती हैं। कुछ लोग बुरा कर्म करते हैं तो उन्हें बुरी योनि प्राप्त होती है। एक व्यवस्थित शक्ति ही सम्पूर्ण सृष्टि को संचालित कर रही है। कुछ लोग उसे ईश्वर कहते हैं, कुछ लोग उसे व्यवस्थित शक्ति कहते हैं और कुछ लोग यह कहते हैं कि यह नियम के अनुसार अपने आप घटित हो रहा है। सभी दृष्टियों में एक बात समान है। वह बात है कोई न कोई शक्ति अवश्य है, जो इस सृष्टि का संचालन कर रही है।

कुदरत का कानून निश्चित है। उसमें कुछ भी हेर–फेर नहीं होता। कुदरत के कानून के अनुसार सभी को पुरस्कार और दण्ड मिलता रहता है। कुदरत का कानून सभी के लिए समान है। वहां न कोई छोटा है और न बड़ा। एक मां के दो पुत्रों में एक बड़ा अधिकारी बन जाता है और दूसरा साधु। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए की एक ने पूर्वजन्म में ऐसा कर्म किया था, जिसके परिणाम के रूप में वर्तमानकाल में ऐसी परिस्थिति का निर्माण हुआ जिससे एक माता के दो पुत्रों में स्पष्ट भेद हो गया। एक अधिकारी बन गया और एक साधु। यह सब कर्मों का खेल है। जो जैसा कर्म किया हैं वह उसी का फल भोगने के लिए आगामी जीवन प्राप्त करता है। इसमें किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होता।

प्रकृति के नियम में कोई बदलाव नहीं होता। उसके नियम को सबको मौन–मूक भाव से स्वीकार करना पड़ता है। कुदरत संयोग जुटाती है। आम का फल मीठा होता है, नीम का फल कड़वा होता है, बबूल में कांटे होते हैं। ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए की प्रकृति में ऐसी व्यवस्था बनी रहती है। जिससे सभी संचालित हो रही है। कुदरत के कानून के बिना एक पता भी नहीं हिलता। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की व्यवस्था प्रकृति कर देती हैं। इसी को संयोग कहते हैं। किसी घटना या दुर्घटना के घटित होने में भी इनका योगदान होता है। एक ट्रेन में

हजारों यात्री यात्रा करते हैं। दुर्भाग्य से जब दुर्घटना होती है तो अनेक लोग हताहत होते हैं। कुछ लोग मर जाते हैं और कुछ लोग जीवित रह जाते हैं।

यहां पर भी कुदरत का कानून देखने को मिलता है। ऐसी अवस्था में लोगों का पूर्वजन्म का किया हुआ कर्म और धर्म उनके सामने आकर खड़ा हो जाता है। वही धर्म उनकी रक्षा करता है। जिससे कोई जीवित रहता है। जिसने अच्छे कर्म नहीं किये है, उनकी धर्म भी रक्षा नहीं करता। इसलिए दुर्घटना में वे मारे जाते है। इसलिए मनुष्य को सदैव सतकर्म करना चाहिए। कहा भी गया है– शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् अर्थात् शरीर धर्माचरण का साधन हैं। धर्म आत्मा के साथ जुड़ा रहता है। धर्म की अनेक प्रकार की व्याख्या की गई है। लौकिक धर्म के रूप में पूजा–पाठ, सतकर्म, दान, सत्संग और धर्मोपदेश आदि का सुनना आता है। इसके द्वारा जीव की आस्तिक बुद्धि बढ़ती है।